This question paper contains **3** printed pages]

HPAS (Main)—2017

HINDI LITERATURE

Paper II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

नोट :— कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अंतिम प्रश्न क्रमांक **8** अनिवार्य है। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. कबीर के नारी संबंधित विचारों में एक अंतर्विरोध है, तर्क सहित स्पष्ट कीजिए। 20

2. ''शृंगार रस का ऐसा सुंदर 'उपालंभ काव्य' दूसरा नहीं''– 'भ्रमरगीत सार' के आलोक में इस कथन पर प्रकाश डालिए। 20

3. 'रामचरितमानस' के अयोध्या काण्ड के आधार पर भरत का चरित्र–चित्रण कीजिए। 20

4. '' 'अंधेर नगरी' नाटक राष्ट्रीय चेतना का सच्चा प्रतिनिधि है'', विवेचना कीजिए। 20

P.T.O.

5. '''गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य है''-इस कथन पर टिप्पणी कीजिए। 20

6. 'शेखर: एक जीवनी' के शिल्प पर प्रकाश डालिए। 20

7. शोक-गीत के रूप में 'सरोज स्मृति' पर विचार कीजिए। 20

8. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) दानव देव अहीस महीस महामुनि तापन सिद्ध समाजी।
जाचक, दानि दुतीय नहीं तुम ही सबकी सब राखत बाजी।।
एने बड़े तुलसीस मऊ सबरी के दिए बिनु भूख न भाजी।
राम गरीबनेवाज! भए हो गरीब-नेवाज गरीब नेवाजी।।

अथवा

अब तक क्या किया, जीवन क्या जिया।।
बताओ तो किस-किसके लिए तुम दौड़ गए,
करुणा के दृश्यों से हाय! मुँह मोड़ गए,
बन गए पत्थर;

बहुत-बहुत ज्यादा लिया,

दिया बहुत-बहुत कम;

मर गया देश, अरे, जीवित रह गए तुम।।

(ख) भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभास मात्र हो जाता है, उसको ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते, दूत! वह किसी बलवान की इच्छा का क्रीड़ा-कंदुक नहीं बन सकता।

अथवा

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव तथा कितना विवेक है।